BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

हिमाचल प्रदेश के युवाओं में स्वावलम्बन- टूरिज्म और हस्तशिल्प के अवसर

अंकित जम्वाल (शोधार्थी),
केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला
Email id- ankitjamwal787@gmail.com

शोध सार

युवा किसी भी समाज के विकास और भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | वर्तमान समय में स्वावलंबन युवाओं के लिए केवल रोजगार का विकल्प नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों, कौशल और उद्यमिता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने का महत्वपूर्ण माध्यम है | हिमाचल प्रदेश में पर्यटन और हस्तशिल्प स्थानीय युवाओं के लिए स्वावलंबन तथा स्वरोजगार के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभर रहे हैं | प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पर्यटन के क्षेत्र में युवाओं के लिए उपलब्ध स्वरोजगार के अवसरों तथा हस्तशिल्प से जुड़े युवाओं की रोजगार एवं आर्थिक स्थिति और उनके समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियों का अध्ययन करना है | अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है | प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार, गैर-सहभागी अवलोकन तथा नमूनाकरण विधि का प्रयोग किया गया | जिसमे कुल 30 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिनमें 10 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण तथा 20 का चयन यादृच्छिक नमूनाकरण के माध्यम से लिया गया है अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि पर्यटन ने युवाओं के लिए होमस्टे, होटल, कैफे, टैक्सी सेवा, टूरिस्ट गाइड, बाइक एवं वाहन किराया, कैंपिंग तथा साहसिक पर्यटन जैसी गतिविधियों में स्वरोजगार के अवसर विकसित किए हैं | वहीं, हस्तशिल्प के क्षेत्र में ऊनी वस्त्र, क्रोशिया उत्पाद, लकड़ी एवं मिट्टी से निर्मित वस्तुओं की मांग युवाओं के लिए आय के नए अवसर उपलब्ध करा रही है | डिजिटल माध्यमों के उपयोग से हस्तशिल्प उत्पादों के विपणन और ऑनलाइन बिक्री की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं | हालांकि, पर्यटन की मौसमी प्रकृति, प्राकृतिक आपदाएँ, सड़क अवरोध, आय की अनिश्चितता तथा लंबे समय तक कार्य करने जैसी चुनौतियाँ सामने आई |

संकेतक शब्द: युवा, स्वावलंबन, रोजगार, पर्यटन, हस्तशिल्प

प्रस्तावना

युवा किसी भी समाज, राष्ट्र के लिए सिर्फ जनसंख्या का हिस्सा नहीं होते, बल्कि वे किसी राज्य और देश की वह रीढ़ की हड्डी होती है जिन पर पूरे देश के भविष्य का निर्माण होता है | युवा शब्द केवल एक आयु वर्ग को नहीं दर्शाता बल्कि यह साहस, नई सोच, असीमित सोच और बदलाव लाने के जज्बे का प्रतीक है | समाज की वह उर्जावान, विचारशील और गतिशील आबादी है, संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 15 -24 वर्ष, जबकि भारत सरकार की राष्ट्रीय युवा नीति के अनुसार 15- 29 वर्ष के आयु वर्ग को युवा माना जाता है | युवावस्था वह समय है जब व्यक्ति में कुछ नया करने का साहस सबसे अधिक होता है | युवाओं के पास इतिहास को बदलने और एक सुनहरा भविष्य बनाने की शक्ति होती है | जब एक युवा अपने सपनों को सही दिशा, अवसर और स्वावलम्बन अर्थात आत्मनिर्भरता के पंख मिलते है तो वह न सिर्फ अपने परिवार बल्कि अपने राष्ट्र का भाग्य तक बदल देते है | आज का युवा नौकरी मांगने वाला नहीं बल्कि नौकरी देना वाला बनाना चाहता है | युवाओं की रचनात्मक क्षमता और नवीन विचार किसी भी समाज के विकास की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | स्वावलम्बन का तात्पर्य केवल रोजगार प्राप्त करना ही नहीं है बल्कि अपने कौशल, ज्ञान, संसाधनों का उपयोग करते हुए आजीविका का निर्माण करना है | स्वावलम्बन अर्थात आत्मनिर्भरता स्थानीय संसाधनों का रचनात्मक उपयोग कर के वैकल्पिक आजीविका प्राप्त करते है | स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था "उठो जागो तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो" | इसी बात को ध्यान में रखते हुए आज के युवाओं का लक्ष्य है स्वावलम्बन | इसी संदर्भ में स्वावलम्बन अथवा आत्मनिर्भरता युवाओं के व्यक्तिगत विकास के साथ साथ सामाजिक और-आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरती है |

हिमाचल प्रदेश, जिसे देव भूमि के नाम से जाना जाता है, यह राज्य न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता बल्कि दुनिया भर में अपनी सांस्कृतिक धोरहर के लिए प्रसिद्ध है | वर्तमान समय में, जहां राज्य के शिक्षत युवाओं के सामने रोजगार और पलायन एक बड़ी चुनौती बनाकर उभरा है | वही स्वावलम्बन आज के समय में युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक अवसर के रूप में सामने आ रहा है | हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक और सांस्कृतिक स्थिति को देखते हुए पर्यटन और हस्तशिल्प ऐसे दो स्तम्भ है जो युवाओं को नौकरी ढूंढने वाले के बजाय दूसरों को रोजगार देने वाला बना सकते है | स्वावलम्बन की राह पर चलते हुए पर्यटन के नए आयामों को आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़कर युवा रोजगार का एक नया अध्याय लिख सकते है | जहां युवा

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

अपने हुनर, स्थानीय हस्तशिल्प और पर्यटन की अपार संभावनाओं को अपनी ताकत बनाता है जिस से वह न केवल खुद के लिए आत्मनिर्भर बनाता है बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा बन जाता है |

साहित्य समीक्षा

ज़ेपल और हॉल (1992), ने अपने पेपर *'आर्ट्स एंड हेरिटेज टूरिज्म: स्पेशल इंटरेस्ट टूरिज्म'* में बताया है कि हेरिटेज टूरिज्म पर्यटकों के सामने मूर्त (जिन्हें छुआ या देखा जा सके) और अमूर्त (जिन्हें महसूस किया जा सके) सांस्कृतिक धरोहरें पेश करता है | ऐतिहासिक इमारतों, पुरातात्विक स्थलों, स्मारकों और संग्रहालयों में रखी सांस्कृतिक वस्तुओं के रूप में अतीत की मूर्त निशानियाँ हेरिटेज टूरिज्म के मुख्य स्रोत हैं |

ऐशवर्थ (2000), ने *'हेरिटेज, टूरिज्म एंड प्लेसेस: ए रिव्यू'* में हेरिटेज टूरिज्म को अतीत की उन वस्तुओं, इमारतों, यादों और अनुभवों के रूप में परिभाषित किया जिन्हें कमर्शियल रूप दिया गया है | इसमें धरोहर बनाने वालों, पर्यटन उद्योग और स्थानीय जगह के प्रबंधकों के बीच सहयोग शामिल है | विशिष्ट प्रकार के धरोहर आकर्षणों के लिए पर्यटकों की पसंद के आधार पर टारगेट मार्केट की पहचान करना ज़रूरी है, क्योंकि सभी धरोहर पर्यटकों की सभी धरोहर आकर्षणों में रुचि हो, ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती |

मैककेर्चर (2002), ने अपने रिसर्च पेपर *'टुवर्ड्स ए क्लासिफिकेशन ऑफ़ कल्चरल टूरिस्ट्स'* में बताया है कि कल्चरल टूरिज्म को पाँच बाज़ारों में बाँटा जा सकता है | यह इस आधार पर तय होता है कि पर्यटक किसी संस्कृति या सांस्कृतिक आकर्षण में कितनी गहराई से जुड़ते हैं, और गंतव्य चुनने में संस्कृति या आकर्षण की कितनी अहम भूमिका थी | कुछ वर्गों के लिए, संस्कृति या आकर्षण ने उनके फ़ैसले में बड़ी भूमिका निभाई, जबकि अन्य वर्गों के लिए, संस्कृति ने उनके फ़ैसले में बहुत कम या कोई भूमिका नहीं निभाई |

न्याउपणे (2009), *'कल्चरल हेरिटेज एंड टूरिज्म इन द डेवलपिंग वर्ल्ड: ए रीजनल पर्सपेक्टिव'* के अनुसार, आज विकासशील दुनिया में धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत पर्यटन के सबसे प्रचलित रूपों में से एक है और यह आधुनिक पर्यटन के शुरुआती रूपों में से एक है | तीर्थयात्रा कई रूपों में होती है, लेकिन इनमें सबसे मुख्य है धार्मिक लोगों की इच्छा देवता से आशीर्वाद मांगना, ईश्वर के करीब आना, सच्ची प्रार्थना करना, रोग से मुक्ति पाना और पापों के लिए क्षमा प्राप्त करना |

अग्रवाल और शॉ (2017), *'हेरिटेज स्क्रीन लिटरेरी टूरिज्म'* (वार्षिक रिपोर्ट) के अनुसार, सांस्कृतिक विरासत पर्यटन बाजार पांच अलग-अलग हिस्सों में बंटा है, जिनकी यात्रा की विशेषताएं अलग-अलग हैं | इससे पता चलता है कि सभी सांस्कृतिक विरासत पर्यटक एक जैसे नहीं होते और उन्हें अलग-अलग तरीकों से आकर्षित करने की आवश्यकता होती है |

सैदम्मा (2022), *'रोल ऑन कल्चरल एंड हेरिटेज टूरिज्म इन इंडिया'* के अनुसार, सांस्कृतिक विरासत का अर्थ उन ऐतिहासिक स्थलों या इमारतों और जगहों के समूह से है जिनका व्यापक सौंदर्यपरक, पुरातात्विक, वैज्ञानिक या नृजातीय महत्व है | वे चीजें जो लोगों की जीवनशैली जैसे परंपराएं, रीति-रिवाज, पहनावा, खान-पान की आदतें, संगीत, नृत्य आदि को दर्शाती हैं, वे सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत आती हैं |

अध्ययन के उदेश्य

I. पर्यटन के क्षेत्र में युवाओं के लिए उपलब्ध स्वरोजगार के अवसरों का अध्ययन करना,
II. हस्तशिल्प से जुड़े युवाओं की रोजगार एवं आर्थिक स्थिति तथा उनके समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियों का अध्ययन करना

शोधक्रिया विधि

इस अध्ययन के उदेश्य को पूरा करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों तरह के डेटा का इस्तेमाल किया गया है | प्राथमिक डेटा इकट्ठा करने के लिए साक्षताकार, गैर सहभागी अवलोकन और नमूनकरण विधि का उपयोग किया गया | डेटा इकट्ठा करने के लिए कुल 30 उत्तरदाताओं को चुना गया है | इनमें से 10 उत्तरदाताओं को उदेश्यपूर्ण नमूनकर्ण विधि के ज़रिए चुना गया है | इन 10 लोगों में मंदिर के 5 हस्तशिल्प है जो लकड़ी और मिट्टी से वस्तुओं को बनाते है साथ ही 5 वे लोग शामिल जो क्रोशिया और अन्य चीजों दवारा टोपी, मफ़लर आदि को बनाते है | बाकी 20 लोगों को यदरीचिक नमूनकरण दवारा चुना गया है | इन उत्तरदाताओं में स्थानीय दुकानदार, टैक्सी ड्राइवर और होमस्टे चलाने वाले शामिल थे, जिनसे यह जानने की कोशिश की गई कि टूरिज़्म का आस-पास के इलाकों के आर्थिक विकास पर क्या असर पड़ रहा है | द्वितीयक डेटा किताबों, दस्तावेज़ों, लेखों, अख़बारों, पत्रिकाओं, इंटरनेट आदि से इकट्ठा किया गया है।

परिणाम और विचार विमर्श

पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

अध्ययन से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि पर्यटन के विस्तार ने युवाओं को रोजगार के अवसरों को विकसित करने में अहम भूमिका निभाई है | पर्यटन के बढ़ते अवसर के दवारा युवाओं के साथ –साथ स्थानीय लोगों की आजीविका में भी परिवर्तन देखने को मिला है | हालांकि,

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

पर्यटन के विस्तार के बाद स्थानीय लोगों ने पारंपरिक आजीविका के साथ-साथ पर्यटन आधारित आर्थिक गतिविधियों को भी अपनाना शुरू किया | इस प्रकार पर्यटन ने स्थानीय समुदाय के लिए आय के वैकल्पिक तथा अतिरिक्त स्रोत उपलब्ध कराए हैं | पर्यटन ने रोज़गार के मौके पैदा करके, छोटे बिज़नेस को बढ़ावा देकर और इनकम बढ़ाकर, इन चीज़ों ने लोकल इकॉनमी को बदलने में अहम भूमिका निभाई है | टूरिस्ट के बढ़ते आने से लोकल लोगों की लाइफस्टाइल, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट और कुल मिलाकर रहन-सहन के स्टैंडर्ड पर भी असर पड़ा है |

पर्यटन ने कई घरों और गांवों को होमस्टे, गाइडिंग, हैंडीक्राफ्ट और ट्रांसपोर्टेशन के ज़रिए अपनी आर्थिक स्थिति बढ़ाने में मदद की है | "ऐसी गुणवता लोकल एंटरप्रेन्योरशिप और बंद कम्युनिटी को बड़े मार्केट से जोड़ने में योगदान देती हैं (बंसल एट अल., 2024) | टूरिज़्म के डेवलपमेंट से पहले, हिमाचल के गांव में रहने वाले लोग मुख्य रूप से पारंपरिक खेती, बागवानी, पशुपालन और जंगल के संसाधनों पर निर्भर थे | यह लोग अपने खेतों और बगीचों में सब्जियां, फल और दूसरी ज़रूरी फसलें उगाकर अपना गुज़ारा करते थे | लेकिन, पर्यटन बढ़ने के साथ, लोगों ने पुराने काम छोड़कर टूरिज़्म पर आधारित काम करना शुरू कर दिया | पर्यटक विदेश, देश के अलग-अलग राज्यों और राज्य के अलग-अलग ज़िलों से यहाँ घूमने आते हैं | पर्यटन बढ़ने के बाद, यहाँ के लोगों ने अपनी ज़मीन पर होटल, गेस्ट हाउस और रहने की दूसरी सुविधाएं बनाईं | इसके अलावा, गांवों के कई परिवारों ने अपने पुराने घरों को होम स्टे और गेस्ट हाउस में बदल दिया है | पुराने घरों को होम स्टे में बदलने का मुख्य कारण यह है कि पर्यटक पुराने स्टाइल के घरों में रहना पसंद करते हैं, जिससे पर्यटक हिमाचली लोकल संस्कृति और जीवन को सीधे अनुभव कर पाते हैं | इसके अलावा, मौजूदा घरों को होम स्टे में बदलना नई बिल्डिंग बनाने से कम खर्चीला है | इन होम स्टे और गेस्ट हाउस में रहने का रोज़ का किराया आमतौर पर 1,500 से 2,000 रुपये तक होता है, जो वहां के परिवारों के लिए कमाई का एक बड़ा ज़रिया बन गया है | ये पर्यटक गांव में बने अपने गेस्टहाउस, होटल और कैंप में रुकते हैं | यह होटल और गेस्ट हाउस सीधे तौर पर लोकल लोगों को रोज़गार देते हैं | इसी तरह, लोकल युवा होटल मैनेजमेंट, होटलों में खाना बनाने, टूरिस्ट गाइड, होटल टैक्सी चलाने और रिसेप्शन वगैरह में काम करते हैं। इससे बेरोज़गारी कम होती है और लोगों की आय भी बढ़ती है |

अध्ययन में पता चला है कि कैफे, रेस्तरां तथा स्थानीय खाद्य पदार्थों की दुकानें भी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मदद करती हैं | जब भी कोई पर्यटक इस स्थान पर आता है तो वह स्थानीय व्यंजनों का स्वाद जरूर चखता है | वे पर्यटकों को घी के साथ सिड्डू खाने के लिए देते हैं, गेहूं के आटे से बना और स्टीम किया हुआ सिड्डू, जिसमें अखरोट, खसखस, दाल या मसाले भरे होते हैं | जिसकी कीमत लगभग 100 रुपये होती है। सिड्डू की कीमत 100 से 150 के बीच होती है | इसके अलावा, टूरिज्म ने सेल्फ-एम्प्लॉयमेंट के नए मौके पैदा किए हैं | सरकारी नौकरी पर निर्भर रहने के बजाय, स्थानीय निवासियों, खासकर युवाओं ने टैक्सी सर्विस, कैफे, कैंपिंग साइट, ट्रेकिंग गाइड सर्विस और अलग-अलग एडवेंचर एक्टिविटी से जुड़े बिजनेस शुरू किए हैं | एडवेंचर पर्यटन के कारण आज बाइक, गाड़ियों की मांग में वृद्धि देखने को मिली है | अध्ययन से ज्ञात हुआ है की बाहर से आए हुए पर्यटक यहाँ के जंगलों, पहाड़ों आदि में ऑफ रोडइँग् करने का मजा लेना चाहते है जिस से इन लोगों को बाइक और जिप्सी जैसी गाड़ियों की अवश्यता होती है | इसलिए युवाओं ने इन पर्यटकों के लिए बाइक और जिप्सी जैसी गाड़ियों को किराए पर देना शुरू कर दिया है | जिसमे पर्यटक इन युवाओं की दुकानों से बाइक ओर गाड़ियों को किराए पर एक या दो दिन के लिए लेते है जिसके बदले यह लोग अपनी कुछ भी मूल्यवान वस्तुएं इन युवाओं के पास जमा करवा देते है ताकि यह पर्यटक इन बाइक और गाड़ियों को वापिस दुकान दुकान में लोटा सके | यह युवाओं के लिए आय कामने का आसान रास्ता है जिसके दवारा युवा आय कर भी रहे है | इस तरह, टूरिज्म ने न सिर्फ इनकम बढ़ाई है, बल्कि इस इलाके में स्थानीय समुदाय में एंटरप्रेन्योरशिप और आत्मनिर्भरता को भी बढ़ावा दिया है |

हस्तशिल्प के द्वारा रोजगर और युवाओं के समक्ष चुनौतियाँ

पर्यटन के बढ़ने से, लोकल इलाके में घरों की आय में काफ़ी बढ़ोतरी हुई है | पर्यटन ने परिवारों को इनकम के अलग-अलग सोर्स दिए हैं | कई परिवारों ने दुकानों, खाने की जगहों, होम स्टे, हैंडीक्राफ्ट की बिक्री और लोकल प्रोडक्ट्स की मार्केटिंग से अतिरिक्त आय कमाना शुरू कर दिया है | पर्यटक की संख्या बढ़ने से ऊनी कपड़ों, हाथ से बनी पारंपरिक चीज़ों की डिमांड बढ़ी है और लोकल खाने का फ़ायदा सीधे लोकल परिवारों को मिला है | इन दुकानों में ये लोग हाथ से बने मोजे, टोपी, मफलर, दस्ताने, हाथ से बने बैग, स्वेटर इत्यादि रखते हैं | मोजे की कीमत करीब 200 रुपये, टोपी की कीमत करीब 100 रुपये, मफलर की कीमत 150 रुपये तक, दस्तानों की कीमत 100 रुपये तथा हाथ से बने बैग व स्वेटर की कीमत 500 रुपये से अधिक है | ये लोग ये सामान राज्य के अंदर से आने वाले पर्यटकों के साथ-साथ राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को बेचते हैं | इसके साथ ही ये लोग अपनी दुकानों में आभूषण तथा स्थानीय आभूषण इत्यादि भी रखते हैं, जो पर्यटकों विशेषकर महिलाओं व बच्चों को आकर्षित करते हैं | ये लोग अपनी दुकानों में कुल्लुवी पारंपरिक परिधान भी रखते हैं | पर्यटक पारंपरिक परिधान पहनकर फोटो खिंचवाना पसंद करते हैं, जिससे दुकानदार और फोटोग्राफर दोनों को फायदा होता है | इस पारंपरिक परिधान को पहनने के लिए पर्यटकों से 100 से 200 रुपये लिए जाते हैं |

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

अध्ययन से सामने आया है की हस्तशिल्प से जुड़े रोजगार में वर्तमान समय में क्रोशिया के दवारा हाथ से बनाई जाने वाली वस्तुओं की भी आज बाजार में लोगों के बीच मांग है | आज की महिला युवा घर बैठे ही क्रोशिया के माध्यम से विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ तैयार कर रहे हैं | इनमें बैग, पर्स, टोपी, स्कार्फ, फूल, सजावटी वस्तुएँ, खिलौने, मोबाइल कवर, छोटे पाउच तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ शामिल हैं | जो देखने में भी बहुत आकर्षित होते है | यह घरेलू स्तर पर स्वरोजगार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन रहा है | क्रोशिया के दवारा बनाए गए उत्पादों की बिकी स्थानीय दुकानों, मेलों, प्रदर्शनियों तथा पर्यटकों को सीधे की जाती है | साथ ही यह देखने को भी मिल है अनलाइन जैसे वाट्सअप, फेस्बूक और इंस्टाग्राम आदि के दवारा भी अनलाइन ऑर्डर लिए जा रहे है | वे अपने उत्पादों की तस्वीरें और वीडियो ऑनलाइन माध्यमों पर साझा करके ग्राहकों तक पहुँच बना रहे हैं और ऑनलाइन ऑर्डर प्राप्त कर रहे है और साथ ही साथ इन्हे अनलाइन बेच भी रहे है | जिसमे इसकी कीमत 100 रुपये से शुरू हो कर ऑर्डर किस तरह का है उस हिसाब से तय की जाती है |

अध्ययन में यह भी पाया गया कि युवा लकड़ी और मिट्टी से विभिन्न प्रकार की हस्तनिर्मित वस्तुओं का निर्माण कर स्वावलंबी हो रहे हैं | वर्तमान समय में लकड़ी और मिट्टी से तैयार की जाने वाली वस्तुओं की मांग स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के बीच भी देखने को मिलती है | स्थानीय युवा अपनी पारंपरिक जानकारी और कौशल का उपयोग करके ऐसी वस्तुएँ तैयार कर रहे हैं, जिनका उपयोग दैनिक जीवन के साथ-साथ घरों की सजावट के लिए भी किया जाता है | इनमें सजावटी वस्तुएँ, खिलौने, मूर्तियाँ, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ तथा विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुएँ शामिल हैं |

मिट्टी से वस्तुएँ तैयार करने की प्रक्रिया में युवा पहले मिट्टी को एकत्रित करके उसे साफ करते हैं तथा उसमें मौजूद पत्थर और अन्य अशुद्धियों को अलग करते हैं | इसके बाद मिट्टी को अच्छी तरह तैयार और गूंथकर आवश्यक आकार दिया जाता है | तैयार वस्तुओं को सुखाने तथा आवश्यकतानुसार सजाने के बाद उन्हें बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध कराया जाता है | इस प्रकार मिट्टी से हस्तनिर्मित वस्तुओं का निर्माण स्थानीय युवाओं के लिए कम स्तर की पूंजी के साथ शुरू किए जा सकने वाले स्वरोजगार का एक माध्यम बन रहा है। इसी प्रकार लकड़ी से हस्तनिर्मित वस्तुओं का निर्माण भी स्थानीय स्तर पर रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है | स्थानीय कारीगर एवं युवा विभिन्न प्रकार की लकड़ी का उपयोग करके सजावटी वस्तुएँ, खिलौने, मूर्तियाँ, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ तथा अन्य कलात्मक उत्पाद तैयार करते हैं | इसके अतिरिक्त, लकड़ी से बने फर्नीचर जैसे मेज, कुर्सियाँ, सोफा तथा अन्य घरेलू सामान भी तैयार किए जा रहे हैं | जिसमे सिर्फ एक कुर्सी की कीमत 1400 रुपये, सोफ़ा सेट की कीमत 10,000 रुपए तक है | लड़की से बने इन समान का उपयोग घर को सजाने और होटल को एक बेहतरीन लुक देने के लिए उपयोग किया जाता है | जिस कारण वर्तमान समय में यह आधिक प्रचलित हो रहे है |

चुनौतियाँ

अध्ययन से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि पर्यटन और हस्तशिल्प ने युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं, लेकिन इन गतिविधियों से जुड़े युवाओं को अनेक आर्थिक, भौगोलिक, प्राकृतिक तथा कार्य-संबंधी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है |

1. पर्यटन से जुड़े रोजगार पूरे वर्ष समान रूप से उपलब्ध नहीं रहते | पर्यटन की गतिविधियाँ विशेष पर्यटन मौसम में अधिक सक्रिय रहती हैं, जबकि ऑफ-सीजन में पर्यटकों की संख्या में कमी आने के कारण स्थानीय युवाओं की आय भी प्रभावित होती है | इसके अतिरिक्त, जून-जुलाई के दौरान अत्यधिक वर्षा और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक परिस्थितियाँ पर्यटन गतिविधियों के लिए एक गंभीर चुनौती बनती हैं | भारी बारिश के कारण कई बार सड़कें अवरुद्ध हो जाती हैं, जिससे पर्यटक निर्धारित पर्यटन स्थलों तक नहीं पहुँच पाते | परिणामस्वरूप होटल, होमस्टे, टैक्सी, बाइक किराये तथा अन्य पर्यटन आधारित सेवाओं की मांग प्रभावित होती है | अध्ययन में यह भी सामने आया कि कुछ युवाओं ने पर्यटन व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण लेकर बाइक अथवा अन्य वाहन खरीदे हैं | पर्यटकों की संख्या में अचानक कमी आने अथवा बुकिंग रद्द होने की स्थिति में उनकी आय कम हो जाती है, जबकि वाहन की किश्त, रखरखाव, बीमा तथा अन्य खर्च नियमित रूप से जारी रहते हैं | इसी प्रकार, होटल और होमस्टे संचालकों को भी खराब मौसम तथा सड़क अवरोध के कारण पर्यटकों द्वारा बुकिंग रद्द किए जाने से आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है | इस प्रकार प्राकृतिक परिस्थितियाँ पर्यटन पर निर्भर युवाओं के लिए आय की अनिश्चितता को बढ़ा देती हैं |
2. हस्तशिल्प तथा फर्नीचर तैयार करने वाले युवाओं के सामने कच्चे माल की उपलब्धता और उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित अनेक चुनौतियाँ भी सामने आईं | लकड़ी से सोफा, टेबल, कुर्सियाँ, सजावटी वस्तुएँ तथा अन्य सामान तैयार करने के लिए आवश्यक लकड़ी कई बार दूरस्थ क्षेत्रों से प्राप्त करनी पड़ती है | इसके कारण कारीगरों को लकड़ी के परिवहन के लिए वाहन का किराया तथा अन्य संबंधित खर्च वहन करना पड़ता है | इसके अतिरिक्त, लकड़ी प्राप्त करने और उसके उपयोग से संबंधित विभिन्न शुल्क एवं औपचारिक लागत भी उत्पादन लागत को बढ़ा

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

सकती हैं। लकड़ी को हस्तशिल्प उत्पाद में परिवर्तित करने की प्रक्रिया भी समय लेने वाली होती है | लकड़ी को काटने, आकार देने, सुखाने और फिर उससे वस्तु तैयार करने में काफी श्रम और समय लगता है | यदि लकड़ी को उचित तरीके से और पर्याप्त समय तक सुखाया न जाए तथा इस दौरान बारिश हो जाए, तो उसमें नमी रह जाने के कारण लकड़ी खराब होने या तैयार उत्पाद की गुणवत्ता प्रभावित होने की संभावना रहती है | इसलिए कारीगरों को लकड़ी को सुरक्षित स्थान पर रखकर उचित तरीके से सुखाने की आवश्यकता होती है | लकड़ी के हस्तशिल्प निर्माण में शारीरिक श्रम भी अधिक होता है | अध्ययन में कुछ कारीगरों ने बताया कि लगातार लकड़ी काटने, घिसने, तराशने तथा आकार देने के दौरान हाथों में चोट लगने तथा शारीरिक थकान जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। लंबे समय तक बारीकी से काम करने के कारण आँखों में थकान और असुविधा की शिकायत भी सामने आई |

3. मिट्टी से हस्तशिल्प वस्तुएँ बनाने वाले युवाओं के सामने भी कच्चे माल की उपलब्धता और उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित समस्याएँ पाई गईं| आवश्यक मिट्टी को कई बार दूरस्थ स्थानों से लाना पड़ता है। इसके बाद मिट्टी को साफ करके उसमें मौजूद पत्थर, कंकड़ तथा अन्य अशुद्धियों को अलग किया जाता है | मिट्टी को उपयुक्त बनाने के बाद ही उससे खिलौने, मूर्तियाँ, सजावटी वस्तुएँ तथा दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुएँ तैयार की जाती हैं | मिट्टी से वस्तु तैयार करने के बाद उसे उचित समय तक सुखाना आवश्यक होता है | मौसम में अचानक परिवर्तन या बारिश होने की स्थिति में तैयार वस्तुओं के खराब होने या टूटने का खतरा रहता है | कई बार पर्याप्त सावधानी के बावजूद सुखाने की प्रक्रिया के दौरान वस्तुओं में दरार आ जाती है या वे टूट जाती हैं, जिससे कारीगर का श्रम और कच्चे माल पर किया गया खर्च दोनों प्रभावित होते हैं |
4. अध्ययन में क्रोशिया कार्य से जुड़े युवाओं तथा अन्य कारीगरों के सामने भी कार्य-संबंधी चुनौतियाँ सामने आईं| क्रोशिया से बैग, टोपी, पर्स, सजावटी वस्तुएँ, खिलौने तथा अन्य उपयोगी सामान तैयार करने में काफी समय और धैर्य की आवश्यकता होती है | एक उत्पाद को तैयार करने में लगने वाला समय उसके डिजाइन और आकार पर निर्भर करता है | इसलिए अधिक उत्पादन के लिए लंबे समय तक लगातार काम करना पड़ सकता है | कुछ युवाओं ने बताया कि लंबे समय तक एक ही स्थिति में बैठकर तथा हाथों की लगातार गतिविधि के साथ क्रोशिया का कार्य करने से हाथों में दर्द, पीठ में असुविधा तथा शारीरिक थकान जैसी समस्याएँ महसूस होती हैं | इसके अलावा, छोटे आकार के डिजाइन और बारीकी से किए जाने वाले कार्य के कारण लंबे समय तक ध्यान केंद्रित करने से आँखों में थकान तथा असुविधा भी होती है |

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश में पर्यटन और हस्तशिल्प युवाओं के लिए स्वावलंबन तथा स्वरोजगार के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में विकसित हुआ है | पर्यटन के विस्तार ने युवाओं को होमस्टे, होटल, कैफे, टैक्सी सेवा, टूरिस्ट गाइड, बाइक एवं वाहन किराया, कैंपिंग तथा साहसिक पर्यटन जैसी विभिन्न गतिविधियों से जुड़ने के अवसर प्रदान किए हैं | इसके साथ ही हस्तशिल्प के क्षेत्र में लकड़ी, मिट्टी, ऊन और क्रोशिया से निर्मित वस्तुओं की बढ़ती मांग ने युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर आय अर्जित करने के नए रास्ते खोले हैं | अध्ययन से यह भी सामने आया कि पर्यटन और हस्तशिल्प केवल युवाओं की व्यक्तिगत आय में वृद्धि तक सीमित नहीं हैं, बल्कि स्थानीय संसाधनों के उपयोग, स्थानीय उद्यमिता और समुदाय की आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा देते हैं | हालांकि, इन क्षेत्रों में रोजगार की मौसमी प्रकृति, प्राकृतिक आपदाएँ, सड़क अवरोध तथा शारीरिक श्रम जैसी चुनौतियाँ युवाओं के स्वावलंबन की राह में बाधा उत्पन्न करती हैं | अतः इन क्षेत्रों की स्थायी प्रगति के लिए युवाओं को कौशल विकास, वित्तीय सहायता, आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण, बेहतर विपणन सुविधाएँ तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ना आवश्यक है | इस प्रकार, यदि पर्यटन और हस्तशिल्प को योजनाबद्ध एवं सतत रूप से विकसित किया जाए, तो ये हिमाचल प्रदेश के युवाओं को रोजगार खोजने वाले से रोजगार सृजित करने वाले उद्यमी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं |

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 3, July-September 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, डी., एवं शॉ, पी. (2017). *हेरिटेज स्क्रीन लिटरेरी टूरिज्म*, इंग्लैंड: पर्ल पब्लिकेशन.
2. ऐशवर्थ, जी. जे. (2000). *हेरिटेज, टूरिज्म एंड प्लेसेस: ए रिव्यू*, टूरिज्म रिक्रिएशन रिसर्च, खंड 25, अंक 1.
3. बंसल, एस. पी., ठाकुर, आर., एवं शर्मा, एस. (2024). *रेजिडेंट ओपिनियंस टुवर्ड्स इम्पैक्ट्स ऑफ कल्चरल हेरिटेज टूरिज्म: ए केस ऑफ कुल्लू वैली, हिमाचल प्रदेश (इंडिया)*, तुरिज़ाम.
4. मैककेर्चर, बी. (2002). *टुवर्ड्स ए क्लासिफिकेशन ऑफ कल्चरल टूरिस्ट्स*, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टूरिज्म रिसर्च, खंड 4, अंक 1.
5. न्याउपणे, जी. पी. (2009). *कल्चरल हेरिटेज एंड टूरिज्म इन द डेवलपिंग वर्ल्ड: ए रीजनल पर्सपेक्टिव*, लंदन एवं न्यूयॉर्क: रूटलेज.
6. सैदम्मा, बी. (2022). *रोल ऑन कल्चरल एंड हेरिटेज टूरिज्म इन इंडिया*, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, खंड 9, अंक 12.
7. जेपल, एच., एवं हॉल, सी. एम. (1992). *आर्ट्स एंड हेरिटेज टूरिज्म: स्पेशल इंटरेस्ट टूरिज्म हेरिटेज*, वीलर, बी. एवं हॉल, सी. एम. (संपादक), *स्पेशल इंटरेस्ट टूरिज्म*, लंदन: बेलहेवन.